

# डॉ. गैरी मीडर्स, 1 कुरिन्थियों, व्याख्यान 12, क्लोए के घराने

## से प्राप्त मौखिक विज्ञप्ति पर पौलुस का उत्तर

### , भाग 3, 1 कुरिन्थियों 2:5-16

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी मीडर्स द्वारा 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर दिए गए अपने उपदेश हैं। यह व्याख्यान 12 है, क्लो के घराने से मौखिक संचार के लिए पॉल की प्रतिक्रिया, अध्याय 2, पद 5 से पद 16 तक।

खैर, जैसा कि हम 1 कुरिन्थियों में अपने व्याख्यान जारी रखते हैं, हम अध्याय 1 से 4 में हैं, और यह व्याख्यान अध्याय 4 के माध्यम से समाप्त होगा, भले ही हमें अगले अध्याय के लिए अध्याय 5 पर जाना पड़े, क्योंकि हमने काफी समय बिताया होगा, भले ही कुछ बहुत बड़े मुद्दे हों, विशेष रूप से ज्ञानमीमांसा का मुद्दा और क्यों पॉल का संदेश उस प्रारंभिक समुदाय के लिए इतना आधिकारिक था।

मैं आज एक छोटा सा विचार लेना चाहता हूँ जिसे मैं भ्रमण कहता हूँ। यह इस पाठ में मौजूद एक विचार को लेना है और इसे एक बड़े धार्मिक क्षेत्र में देखना है, और यह 2, 6 से 16 में आता है क्योंकि पॉल ने इस बात के लिए माफ़ी मांगी है कि वह जो जानता है उसे कैसे जानता है और उसका ज्ञान आधिकारिक क्यों है, जिसे हमने आत्मा की शिक्षा के संदर्भ में अपने पिछले व्याख्यान में देखा था। और इसलिए यह एक बाइबिल ज्ञानमीमांसा है।

यह कई मायनों में इस बात का आधार है कि हम शास्त्रों को जिस तरह से स्वीकार करते हैं, उसी तरह से क्यों स्वीकार करते हैं और क्यों हम शास्त्रों का पालन करने के लिए इतने अड़े रहते हैं। चर्च युग के दौरान आत्मा और मार्गदर्शन एक प्रमुख ज्ञानमीमांसा समस्या है। मैंने ईश्वर की इच्छा जानने पर एक किताब लिखी है, और उसमें मैंने आत्मा पर एक अध्याय लिखा है।

मेरे पास विवेक पर एक अध्याय, प्रार्थना पर एक अध्याय, और कुछ अन्य चीजें हैं जिन्हें आप पुनः प्राप्त कर सकते हैं। इसे प्राप्त करने के लिए अब सबसे अच्छी जगह लागोस बाइबिल सॉफ्टवेयर है, और आप इसे एक अलग पुस्तक के रूप में खरीद सकते हैं और इसे पढ़ सकते हैं, या आप इसे अपनी इच्छानुसार उनके पैकेज के भीतर खरीद सकते हैं। लेकिन मैं बाइबिल ज्ञानमीमांसा के प्रश्न के बारे में बात करना चाहता हूँ।

ज्ञानमीमांसा और विशेष रूप से प्रकाश की अवधारणा, जिस पर 1 कुरिन्थियों 2, 6 से 16 हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं, और इस अंश का उपयोग अक्सर यह दावा करने के लिए किया जाता है कि ईश्वर सीधे तौर पर विभिन्न तरीकों से ईसाइयों को जानकारी देता है। मुझे नहीं लगता कि यह अंश इसी बारे में है, और इसलिए मैं यहाँ थोड़ा समय लेना चाहता हूँ और प्रकाश की इस अवधारणा के बारे में बात करना चाहता हूँ। अब मैं प्रकाश शब्द को उद्धरण चिह्नों में रखता हूँ क्योंकि यह एक धार्मिक निर्माण है।

ऐसा कोई कथन नहीं है कि ईश्वर आपको स्वयं प्रकाशित करता है। व्यवस्थित धर्मशास्त्र में, प्रकाशन के बारे में कई तरीकों से सोचा जा सकता है, लेकिन यदि आप इस विषय पर मानक व्यवस्थित धर्मशास्त्रों को देखें, तो आप पाएंगे कि प्रकाशन के बारे में बात करने का बेहतर तरीका आत्मा की गवाही के बारे में बात करना है। यही वह वाक्यांश है जिससे प्रकाशन के धर्मशास्त्र का पूरा विचार आता है।

एक बेंच स्तर पर रोशनी को अक्सर भगवान द्वारा सीधे आपको बाइबल का अर्थ बताने के रूप में माना जाता है, कुछ इसी तरह की बातें। मुझे खेद है, लेकिन यह लोगों की कल्पना की उपज है। हमें बहुत सावधान रहना चाहिए कि हम खुद से बात करते समय खुद को गलत तरीके से न पहचानें जैसे कि भगवान हमें कुछ बता रहे हों।

अब, आइए रोशनी की अवधारणा और आत्मा की गवाही के मुद्दे के बारे में सोचें। तीन ऐसे पाठ हैं जो आत्मा की गवाही के बारे में बात करते हैं। रोमियों 8:16, आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ गवाही देती है कि हम परमेश्वर की संतान हैं।

उस विशेष संदर्भ में, आत्मा की गवाही विश्वासी के लिए आंतरिक चीज़ है जो हमें यह दृढ़ विश्वास दिलाती है कि हम ईसाई हैं, कि हम यीशु मसीह में सच्चे विश्वासी हैं, कि हमारा फिर से जन्म हुआ है, हमारा पुनर्जन्म हुआ है, कि परमेश्वर ने जो वादा किया था वह हमारे साथ हुआ। हम इसे जानते हैं। हम इसे बिल्कुल परख नहीं सकते, लेकिन हम इस तथ्य के लिए जानते हैं कि यीशु मसीह हमारे व्यक्तिगत उद्धारकर्ता हैं और हमारा यह विश्वास कि यह सच है, आत्मा का कार्य है।

यह हमारे भीतर आत्मा की गवाही है। रोमियों 8:16 इसी के बारे में बात कर रहा है। 1 यूहन्ना 5:10 एक और पाठ है।

जो कोई परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, उसके पास साक्षी है। यह उद्धार के आश्वासन का दूसरा पहलू है। वास्तव में, 1 यूहन्ना का पत्र विशेष रूप से विश्वासियों को उस उद्धार का आश्वासन देने के लिए लिखा गया है जिसका वे दावा करते हैं।

मैं इस समय 1 यूहन्ना में नहीं जा सकता, लेकिन यही इसका उद्देश्य है। अध्याय 5 में, यह इस बारे में बात करता है। ये बातें इसलिए लिखी गई हैं ताकि तुम जान सको कि तुम उसे जानते हो।

रोमियों 5, पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में भर गया है। परमेश्वर का प्रेम, अर्थात् प्रेम, उन सभी नैतिकताओं के लिए एक शब्द है जो परमेश्वर के प्रति हमारी आज्ञाकारिता और दूसरों के प्रति परमेश्वर की आज्ञाकारिता में हमारे साथ जुड़ी हुई हैं। पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में भर गया है।

तो, आत्मा की गवाही मोक्ष के प्रश्न, मोक्ष के आश्वासन, और हमारे सामुदायिक दायित्वों के संबंध में हमारे दृढ़ विश्वास से संबंधित इन ग्रंथों में प्रमुखता से है। अब, यहाँ इस तथाकथित प्रकाश के धर्मशास्त्र का थोड़ा सा ऐतिहासिक अवलोकन है। मुझे यह पसंद नहीं है, लेकिन मैं इसका

उपयोग करूँगा क्योंकि इसका उपयोग कुछ लोगों द्वारा किया जाता है - इस विषय का एक ऐतिहासिक अवलोकन।

पश्चिमी चर्च के इतिहास में, और एक बार फिर, हम पश्चिमी चर्च को देख रहे हैं; 1500 के दशक में रोमन कैथोलिक चर्च और सुधारकों के बीच संघर्ष हुआ था, विशेष रूप से अधिकार के मुद्दे को लेकर। रोमनवाद के लिए, चर्च ने अंतिम अधिकार का प्रयोग किया, जिसमें एकमात्र अधिकार, राज्य और धर्मग्रंथ का अर्थ शामिल था। अब, जैसा कि आप जानते हैं, यह सुधारकों को पसंद नहीं आया।

सुधारकों के लिए, अधिकार केवल धर्मग्रंथों में निहित है, और विश्वासी को धर्मग्रंथों का अध्ययन करने और उनके अर्थ के बारे में निष्कर्ष निकालने का अधिकार और जिम्मेदारी है। इसलिए, सुधार काल में, इस बात को लेकर संघर्ष था कि अधिकार कहाँ रहता है। क्या अधिकार चर्च में रहता है, या अधिकार केवल धर्मग्रंथों में रहता है? ठीक है, तो, आप इसे ऐतिहासिक रूप से जानते हैं।

जॉन कैल्विन के संस्थान, उन संस्थानों के खंड एक में, कैल्विन ने धर्मग्रंथ, चर्च, जो रोमन निर्माण था, बाइबिल, चर्च को बदलकर इस ऐतिहासिक मुद्दे को संबोधित किया, लेकिन आप चर्च के माध्यम से बाइबिल तक पहुँचते हैं। कैल्विन ने समीकरण को बाइबिल, आत्मा में बदल दिया, चर्च को समीकरण से बाहर कर दिया, और आत्मा को श्रेणी दी। चर्च वचन को अधिकार देता है।

रोमन अवधारणा में, आत्मा ऐतिहासिक रूप से वचन को अधिकार देती है। और इसलिए, कैल्विन ने समीकरण को वचन, चर्च से बदलकर वचन, आत्मा कर दिया। उन्होंने इसे टेस्टिमोनियम का सिद्धांत कहा।

दूसरे शब्दों में, आत्मा हमारे भीतर गवाही देती है, और जिसे हम पूरी तरह से नहीं समझ पाते। यह एक दृढ़ विश्वास है। मैंने अभी दृढ़ विश्वास शब्द का इस्तेमाल किया है।

हमारा आंतरिक विश्वास कि परमेश्वर का वचन अधिकारपूर्ण है, महत्वपूर्ण है, और हमें इस बात पर विश्वास करने की आवश्यकता है कि आत्मा हमारे अंदर क्या करती है। कैल्विन ने आत्मा की भूमिका को विश्वासी के हृदय को दृढ़ विश्वास दिलाने के रूप में देखा। और वचन से, बाइबल में हृदय क्या है? हृदय मन है।

सत्यनिष्ठा के बारे में, यह मन का क्षेत्र है, है न? और शास्त्र का अधिकार। उन्होंने इसे वचन की प्रभावकारी पुष्टि कहा। तो, सुधार से निकले वचन और आत्मा एक साथ काम कर रहे हैं।

यही ज्ञानमीमांसा है, देखिए। उस काल में रोमन चर्च के लिए ज्ञानमीमांसा शब्द और चर्च थी। चर्च के पास अधिकार था।

लेकिन अब, यह वचन और आत्मा है। आत्मा के पास वचन के साथ संगति करने का अधिकार है। अब, इसने अपनी खुद की समस्याएँ पैदा कीं, बेशक, और पश्चिमी दुनिया के भीतर बहुत

विविधता पैदा हुई क्योंकि इसने रोमन चर्च जैसी बड़ी स्थिति के अलावा किसी और चीज़ के लिए क्षेत्र खोल दिया।

केल्विन के लिए, आत्मा की भूमिका अनुनय की थी, न कि विषय-वस्तु की। विषय-वस्तु वह शब्द था जिसके लिए आत्मा गवाही देती थी। मैं फिर से गवाही शब्द पर वापस आता हूँ, क्योंकि बाइबल के पाठ में ही आत्मा के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल किया गया है।

आत्मा हमारी आत्मा के साथ, हमारे आंतरिक अस्तित्व के साथ गवाही देती है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। अच्छा, यह कैसे काम करेगा? अच्छा, बाइबल कहती है, अपने पूरे दिल से, अपने पूरे दिमाग से प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करो, और तुम बच जाओगे, ठीक है? अच्छा, मैं समझ गया कि इसका क्या मतलब है। मैंने यीशु के सामने अपने पाप और उद्धारकर्ता की आवश्यकता को स्वीकार किया।

मैं ईसाई बन गया। फिर अचानक मेरे अंदर यह दृढ़ विश्वास उमड़ पड़ा। यह सच है।

यह कुछ इस तरह है जैसे आपकी आँखों से पर्दा हटा दिया गया हो। पहले, मैं आस्तिक था; मैं बाइबल पढ़ सकता था, और मैं बाइबल का छात्र नहीं था, लेकिन सिर्फ शब्दों को पढ़ना समझ में नहीं आता था। मुझे लगता है कि यह बात लगभग हर किसी पर लागू होती है।

आपको इसका अध्ययन करना होगा। लेकिन मैंने इसे पढ़ा। इसका कोई मतलब नहीं निकला।

लेकिन जब मैं ईसाई बन गया, तो अचानक मुझे जॉन का सुसमाचार दिया गया। मैं नौसेना में था, तब मेरा धर्म परिवर्तन हुआ था, और जिस चर्च में मैंने मसीह को स्वीकार किया था, उसने मुझे जॉन का सुसमाचार पढ़ने के लिए दिया, और इसकी रूपरेखा और रेखांकन किया गया था, और इसी तरह, और इसी तरह, ताकि यह मुझे समझ में आए। अचानक, जब मैंने कहा कि ईश्वर ने दुनिया से बहुत प्यार किया, तो मेरे पास एक जगह थी जहाँ मैं अपना नाम लिख सकता था।

यह वास्तव में बहुत प्रभावी है। अब, मैं ईश्वर के परिवार का हिस्सा हूँ, और मेरे पास वह आंतरिक विश्वास है। वास्तव में, नौसेना से बाहर आने और स्कूल जाने के बाद, मुझे लगा कि, ठीक है, आप जानते हैं, यह ईसाई चीज़ बहुत ज़्यादा दबंग है।

मुझे यकीन नहीं है कि मैं ऐसा चाहता हूँ, और मैंने वास्तव में अपने उद्धार पर संदेह करने की कोशिश की। मैंने संदेह करने की कोशिश की कि यह सब मेरे लिए सच था, और संदेह करने की कोशिश के बीच भी, मुझे एक बेवकूफ की तरह महसूस हुआ। तुम क्या कर रहे हो? तुम्हें पता है कि यह सच है।

यह आपके जीवन में कई अलग-अलग तरीकों से सामने आया है। आपका मन बदल गया है। आपकी सोच बदल गई है।

तुम्हारा व्यवहार बदल गया है। बस हार मान लो और इसे स्वीकार कर लो, और मूल रूप से, यही मेरा संदेह था। मेरे संदेह ने मुझे उस आंतरिक विश्वास से अवगत कराया कि मैं वास्तव में ईश्वर की संतानों में से एक था।

इसलिए, सुधारकों के लिए, अधिकार केवल पवित्रशास्त्र में निहित है, और विश्वासी के पास पवित्रशास्त्र का अध्ययन करने और उसके अर्थ के बारे में निष्कर्ष पर पहुँचने का अधिकार और जिम्मेदारी है। कैल्विन ने आत्मा की इस भूमिका को एक दृढ़ विश्वास, वचन की एक प्रभावशाली पुष्टि के रूप में देखा। इसलिए, इसमें आत्मा की भूमिका मुझे यह बताना नहीं है कि बाइबल का क्या अर्थ है, बल्कि मुझे यह विश्वास दिलाना है कि जब मैं बाइबल का अर्थ सीखता हूँ, तो मुझे यह विश्वास दिलाना है कि यह सत्य है, यह सम्मोहक है, यह आवश्यक है।

राम के रूप में, जिन्होंने आत्मा की गवाही पर एक किताब लिखी है, यह एकमात्र ऐसी किताब है जिसके बारे में मैं जानता हूँ जो समर्पित है। यह वास्तव में एक शोध प्रबंध था, लेकिन यह एक बहुत ही पठनीय पुस्तक है जिसका नाम है आत्मा की गवाही। आप इसे विभिन्न पुस्तकालयों में पा सकते हैं।

उन्होंने कैल्विन को यह कहते हुए संक्षेप में प्रस्तुत किया, उद्धरण, क्योंकि टेस्टिमोनियम एक अनुनय है, यह किसी चीज़ के बारे में अनुनय है। यह अपने आप में कुछ नहीं है। अनुनय स्व-पूर्ति नहीं है, लेकिन यह किसी चीज़ के बारे में अनुनय है।

यह अपनी स्वयं की विषय-वस्तु नहीं है। गवाही एक खुलासा करने वाली क्रिया है, न कि प्रकट की गई विषय-वस्तु। क्रिया दृढ़ विश्वास है।

यह एक रोशनी है, संचार नहीं। रोशनी अब दृढ़ विश्वास है, और मुझे लगता है कि इसके बारे में सोचने का यही सबसे अच्छा तरीका है। इस कारण से, कैल्विन ने इस इतिहास के उत्साही लोगों का विरोध किया, जिन्होंने सामग्री के साथ रहस्योद्घाटन का दावा किया था।

कैल्विन और सुधार के समय, हमारे अपने समाज में कुछ धार्मिक आंदोलन मौजूद नहीं थे, लेकिन कुछ लोग थे, जिन्हें उत्साही कहा जाता था, जो पवित्रशास्त्र के साथ प्रतिस्पर्धा में ईश्वर से सीधे रहस्योद्घाटन का दावा कर रहे थे, और कैल्विन ने कहा, नहीं, यह स्वीकार्य नहीं है। अब, आपको कैल्विन के साथ चलने के लिए कैल्विनिस्ट होने की ज़रूरत नहीं है। कैल्विन के पास कुछ अच्छी अंतर्दृष्टि थी, वचन के बारे में कुछ बहुत ही व्यावहारिक अंतर्दृष्टि थी, और मुझे लगता है कि यह उनमें से एक है, लेकिन कैल्विन निश्चित रूप से अकेले नहीं हैं।

व्यवस्थित धर्मशास्त्रों की कई किस्में हैं, लेकिन व्यवस्थित धर्मशास्त्रों का बड़ा हिस्सा आत्मा की गवाही को ठीक उसी तरह से देखता है जैसा मैं आपको बता रहा हूँ। यह मेरा कोई बढ़िया विचार नहीं है। विषय का एक धर्मशास्त्रीय अवलोकन।

त्रिदेव के सम्बन्ध में आत्मा की गवाही। आत्मा किस प्रकार गवाही देती है, त्रिदेव के अन्दर आत्मा किस प्रकार कार्य करती है? खैर, आत्मा की भूमिका मसीह को महिमा देना है। यही आत्मा की भूमिका है।

आत्मा की भूमिका खुद को ऊंचा उठाना नहीं है। आत्मा की भूमिका मसीह को ऊंचा उठाना है, और यूहन्ना के सुसमाचार में कुछ स्थानों पर इस बारे में बात की गई है, मसीह को लोगों के ध्यान में लाना, और लोगों को मसीह के बारे में विश्वास दिलाना। यही आत्मा की भूमिका है।

जब हम बाहर जाते हैं और लोगों के साथ सुसमाचार साझा करते हैं, तो हम इस तथ्य पर भरोसा कर सकते हैं कि परमेश्वर की आत्मा इस गतिविधि में रुचि रखती है और लोगों को शास्त्रों की गवाही के माध्यम से मसीह की आवश्यकता के बारे में समझाएगी। आत्मा को कभी भी अपने आप में एक लक्ष्य के रूप में नहीं बल्कि एक लक्ष्य, अर्थात् मसीह के साधन के रूप में चित्रित किया जाता है। वह हमें मसीह की ओर ले जाता है, वह मसीह की महिमा करता है, और वचन के माध्यम से हमें मसीह सिखाता है।

यह मसीह का व्यक्तित्व और कार्य है। मैं आपको 62 के शीर्ष पर दिए गए पैराग्राफ नहीं पढ़ने जा रहा हूँ। आप उसे पढ़ सकते हैं।

यह बस उसी तरह की बात है। यह आत्मा द्वारा ईश्वरत्व की योजनाओं को क्रियान्वित करने के बारे में बात करता है, और वह क्रियान्वयन आत्मा द्वारा हमें शास्त्रों की ओर प्रेरित करना है। मैं इसे इस तरह कह सकता हूँ।

यदि आपके पास बाइबल में जाने, बाइबल सीखने, इसे गंभीर स्तर पर सीखने और दूसरों के साथ साझा करने की प्रेरणा नहीं है, तो आपके पास आत्मा के प्रति प्रतिक्रिया की कमी है क्योंकि आत्मा यही करती है। आप उस खालीपन को अन्य चीजों से भर रहे हैं, शायद गतिविधियों से, शायद समाजवाद, सामाजिक गतिविधियों से, और आप इसे उन चीजों से नहीं भर रहे हैं जिनकी आपको चर्च ऑफ गॉड में उपयोगी होने के लिए आवश्यकता है: दो, आत्मा की गवाही और रहस्योद्घाटन।

आत्मा वचन की गवाही देती है। वचन और आत्मा स्वतंत्र इकाई नहीं हैं। आत्मा वचन से इस अर्थ में जुड़ी हुई है कि आत्मा वहीं काम करती है।

आप वचन को यहाँ नहीं ले जा सकते और यहाँ आकर यह नहीं कह सकते कि, आत्मा मुझे बताए कि मुझे क्या करना चाहिए। नहीं, आप वचन के पास जाकर पता लगा सकते हैं कि आपको क्या करना चाहिए और परमेश्वर की आत्मा से प्रार्थना कर सकते हैं कि वह आपको पवित्रशास्त्र के प्रति आज्ञाकारी बनने में मदद करे। आप वचन और आत्मा को अलग-अलग नहीं कर सकते।

वे एक साथ चलते हैं। आत्मा और मुक्ति की गवाही। वास्तव में यहीं पर पाठ घटित होता है।

यह मोचन पाठ में है। हमारे पास इन अन्य श्रेणियों में से कई के लिए विशेष छंद नहीं हैं। हम वहाँ धार्मिक निर्माण कर रहे हैं।

आत्मा और मुक्ति की गवाही। आत्मा हमारी आत्मा के साथ गवाही देती है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। एक ऐसा कार्य जिसके द्वारा आत्मा किसी व्यक्ति को उद्धार की आवश्यकता के बारे में वचन की सच्चाई को पहचानने और उसका जवाब देने में सक्षम बनाती है।

यह परमेश्वर का वचन है। आत्मा की गवाही और व्याख्या। पवित्रशास्त्र में ऐसा कोई पाठ नहीं है जो आपको बताए कि आत्मा आपको बाइबल का अर्थ बताएगी।

और हम कुछ ऐसे पाठों पर नज़र डालेंगे जिनका इस तरह से दुरुपयोग किया गया है। दो या तीन। बस इतना ही है, वास्तव में।

लेकिन आत्मा की भूमिका यह नहीं है। आत्मा की भूमिका आपकी टिप्पणी करना नहीं है। आत्मा की भूमिका आपको यह विश्वास दिलाना है कि बाइबल गंभीर और वास्तविक है, इसका अध्ययन किया जाना चाहिए, इसे खोला जाना चाहिए, और बेहतर होगा कि आप व्यस्त हो जाएं।

आत्मा की भूमिका यही है। मेरे पास यहाँ एक बहुत ही शब्दाडंबरपूर्ण पैराग्राफ है, लेकिन यह बहुत भरा हुआ है और मैं इसे आपके लिए पढ़ने जा रहा हूँ। आप इसे पढ़ सकते हैं।

यह ऐसी चीज़ है जिसके बारे में आपको सोचना और समझना होगा। मैंने इस पर बहुत सोचा है, और यह बहुत सारे अध्ययनों का अंतिम परिणाम है। हर विश्वासी पवित्र आत्मा के साथ एक रिश्ता बनाए रखता है।

जब हम ईसाई बनते हैं, तो परमेश्वर की आत्मा हमारे साथ एक रिश्ता बनाए रखती है। हम अक्सर ऐसी भाषा का इस्तेमाल करते हैं कि हम आत्मा द्वारा वास किए गए हैं। यह एक धार्मिक रूपक है।

जब यह कहा जाता है कि आप आत्मा से भरे हुए हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि आपके सीने में ईश्वर का एक टुकड़ा है। मुझे डर है, दुर्भाग्य से, इस तरह की कल्पना अक्सर लोगों के साथ होती है। नहीं, आत्मा द्वारा भरे होने का अर्थ है कि आप ईश्वर के साथ एक वास्तविक संबंध बनाए रखते हैं, ईश्वर की आत्मा द्वारा ऊर्जावान होते हैं।

जिसे आम तौर पर रोशनी कहा जाता है वह पुनर्जन्म का लाभ है, जिसमें आत्मा विश्वासी को अपने और अपने संसार के बारे में शास्त्र की शिक्षा को मानने की क्षमता का प्रयोग करने में मदद करती है, ताकि हम शास्त्र द्वारा व्याख्या किए जा सकें। ईश्वर की आत्मा हमें उसमें प्रवेश करने में मदद करती है, उसे स्वीकार करती है, हमें इसकी सामग्री नहीं देती है, लेकिन संभवतः हमारी इच्छा के साथ काम करती है, प्रमुख रूप से, हमें अपने घुटनों पर लाने के लिए, जैसा कि यह था, और ईश्वर की सच्चाई को प्राप्त करने के लिए। शास्त्र के इच्छित अर्थ तक पहुँचने की वास्तविक प्रक्रिया ही व्याख्याशास्त्र का कार्य है।

इस इच्छित अर्थ को उजागर करने की क्षमता व्याख्याकार के विज्ञान और कला को लागू करने में कौशल और शास्त्रों में वास्तव में जो सिखाया जाता है, उसे स्वीकार करने की उसकी इच्छा पर निर्भर करती है। देखिए, यही बड़ी समस्या है। सोसाइटी ऑफ बाइबिलिकल लिटरेचर के विद्वान

बाइबिल को जानते हैं, लेकिन उन्होंने कभी भी इसकी शिक्षाओं को महत्वपूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया है।

यह उनके लिए एक अकादमिक चीज़ है, न कि उनके लिए वास्तविक जीवन की चीज़। अकादमिक चीज़ में कुछ भी ग़लत नहीं है। इसने हमें इतिहास, संस्कृति, भाषा, इत्यादि के बारे में अनंत जानकारी प्रदान की है।

लेकिन परमेश्वर की आत्मा हमें अपने घुटनों पर लाने के लिए अगला कदम है, जैसा कि यह था, और उन नैतिकताओं और रीति-रिवाजों का पालन करें जो शास्त्र हमें देते हैं। इस इच्छित अर्थ को उजागर करने की क्षमता व्याख्याकार के विज्ञान और व्याख्याशास्त्र की कला को लागू करने के कौशल पर निर्भर करती है। आत्मा नई या व्याख्यात्मक सामग्री का संचार नहीं करती है।

आत्मा आपको यह नहीं बताएगी कि बाइबल का क्या मतलब है। अगर आपको लगता है कि ऐसा हो रहा है, तो यह आप खुद से बात कर रहे हैं। यह आत्मा की भूमिका नहीं है।

कहीं भी ऐसा कोई पाठ नहीं है जो आपको यह बताता हो। यह एक ऐसी धारणा है जिसे आपने मान लिया है। यह वहाँ नहीं है।

बल्कि, आत्मा, अकथनीय तरीकों से, व्याख्याकार को उस शिक्षा को स्वीकार करने में मदद करती है, जिसे वह प्राप्त कर रहा है, जबकि वह थोपे जाने से बचता है, मैं कहना चाहूँगा, मन-इच्छा-भावना जटिलता के थोपे जाने से बचने की कोशिश करता है, जो सामग्री को स्वार्थी ट्रैक में बदल देता है या विकृत कर देता है। अब, यह मेरा अच्छा विचार नहीं है। मैंने आपको यहाँ एक ग्रंथ सूची दी है ताकि आप उन चीज़ों के बारे में पढ़ सकें जिनके बारे में मैं अभी बात कर रहा हूँ और बहुत सारी और व्याख्या पा सकें, लेकिन आप इसे मेरी बात के साथ सामंजस्य में पाएँगे, व्याख्या के इस प्रश्न के संबंध में आत्मा की क्या भूमिका है।

यहाँ लेखकों की एक विस्तृत विविधता है, और पढ़ने के मामले में आपको कुछ समय के लिए व्यस्त रखने के लिए बहुत कुछ है। मैंने उन लोगों को हाइलाइट किया है जिन्हें मैं आपको पहले पढ़ने की सलाह दूँगा। इसे किसने लिखा है, इस बारे में जल्दबाजी में निर्णय न लें।

अपने निर्णय इस आधार पर लें कि वे आपको जो बता रहे हैं उसे कैसे समझाते हैं। अब, मुख्य पाठ जो हमें प्रकाश के बारे में इस चर्चा में लाता है वह है 1 कुरिन्थियों 2:6-16। कई लोगों ने 2:15 को बाइबल से लिया है और उसका अनुमान लगाया है।

आत्मा वाला व्यक्ति सभी चीज़ों के बारे में निर्णय लेता है, लेकिन ऐसा व्यक्ति केवल मानवीय निर्णयों के अधीन नहीं होता। मुझे वास्तव में इसका शाब्दिक अनुवाद ज़्यादा पसंद है। आइए एक बार NRSV पर नज़र डालें।

2:15. जो लोग आध्यात्मिक हैं वे सभी चीज़ों को समझते हैं, और वे खुद किसी की जांच के अधीन नहीं हैं। इसका क्या मतलब है? क्या आप सभी चीज़ों को समझते हैं? क्या आप सब कुछ जानते हैं? मैं सब कुछ नहीं जानता, और मैं यह कहने की हिम्मत करता हूँ कि मैंने शायद आप में से

अधिकांश लोगों की तुलना में इस बारे में काफी सोचा है। मैं सब कुछ नहीं जानता, इसलिए यह अंश पूर्ण अर्थ में यह नहीं कह रहा है कि सिर्फ इसलिए कि आपके पास आत्मा है, आप सर्वज्ञ हैं।

नहीं, आप नहीं हैं। हालाँकि, इसका मतलब यह है कि मुझे लगता है कि ईश्वर की आत्मा हमारे भीतर स्पष्ट रूप से काम करती है ताकि हम सृजित वास्तविकता को समझ सकें। सभी सृजित वास्तविकताओं का स्रोत ईश्वर है।

सृष्टि में ऐसा कुछ भी नहीं है जो परमेश्वर को आश्चर्यचकित कर दे। वह हस्तक्षेप करना नहीं चाहता और अक्सर नहीं करता, यहाँ तक कि इस दुनिया में मौजूद भौतिक बुराई में भी। इस दुनिया में बहुत सी बुराई अच्छे, ईश्वरीय लोगों के साथ होती है, और परमेश्वर इसे रोकने के लिए एक उंगली भी नहीं उठाता।

भगवान आमतौर पर इस दुनिया की घटनाओं में हस्तक्षेप करना नहीं चुनते हैं, और फिर भी, ऐसे तरीकों से जिनके बारे में हम जानते भी नहीं हैं या जिनके बारे में हमें कोई सुराग भी नहीं है, वह दुनिया के कई तरीकों से इतिहास का आयोजन कर रहे हैं। एक बूंद से, एक बारिश की बूंद से, एक बारिश की बूंद के गिरने से लेकर एक राज्य के पतन तक, जैसा कि किसी ने कहा, कुछ भी भगवान को आश्चर्यचकित नहीं करता है। और इसलिए, जो लोग आध्यात्मिक हैं वे सभी चीजों को समझते हैं, और वे स्वयं किसी की जांच के अधीन नहीं हैं।

अब आप इसे लेकर समस्याएँ खड़ी कर सकते हैं, है न? कि आप किसी और के द्वारा आलोचना, आलोचना या मूल्यांकन के अधीन नहीं हैं। जाहिर है, उस पाठ का यह मतलब नहीं है। ऐसा कहना हास्यास्पद होगा।

आइए देखें कि क्या एनआईवी ने ऐसा किया और इसे स्पष्ट किया। 2:15, आत्मा वाला व्यक्ति सभी चीजों के बारे में निर्णय लेता है। अच्छा, आप वे निर्णय क्या करते हैं? आप वे निर्णय कैसे करते हैं? यह आत्मा नहीं है जो निर्णय लेती है; आप आत्मा के साथ निर्णय लेते हैं।

आत्मा ही प्रकटकर्ता रही है, जैसा कि हमने अभी 2:6-16 में पढ़ा है। आपके पास पाठ है, आपके पास विश्वदृष्टि है, और आप अपने निर्णय लेते हैं। लेकिन ऐसा व्यक्ति केवल मानवीय निर्णयों के अधीन नहीं है। दूसरे शब्दों में, आपने और पौलुस ने कई अवसरों पर यह कहा: आप किसी और के निर्णय के अधीन नहीं हैं, बल्कि आप परमेश्वर के निर्णय के अधीन हैं।

पॉल 4:4 में कहते हैं कि यहाँ बहुत ही रोचक पाठ हैं, अगर आप उन पर एक पल के लिए गौर करें। एनआईवी, मेरा विवेक साफ है, लेकिन इससे मैं निर्दोष नहीं हो जाता। खैर, यह दिलचस्प है।

मैंने सोचा कि एक साफ विवेक आपको एक खुला रास्ता देता है, पॉल के अनुसार नहीं। यह प्रभु है जो मेरा न्याय करता है। पॉल कुरिन्थियों से कह रहा था, आप मेरे बारे में हर तरह की बातें कह सकते हैं, लेकिन दिन के अंत में, मैं भगवान के सामने खड़ा हूँ।

भगवान मेरा न्याय करेंगे। इस बीच, हम कैसे निर्णय लेते हैं? हम शास्त्र की शिक्षाओं को उन मुद्दों से जोड़कर निर्णय लेते हैं जिनसे हम अपनी दुनिया में निपट रहे हैं। अधिकांश समस्याएँ, अधिकांश सांस्कृतिक चुनौतियाँ, और अधिकांश चीज़ें जिनसे हम, हमारे आधुनिक विश्व में ईसाई होने के नाते, निपटते हैं, उनका बाइबल में कोई प्रमाण पाठ नहीं है।

क्या इसका मतलब यह है कि बाइबल में उनका समाधान नहीं है? नहीं। आपको उच्च वर्गीकरण में जाना होगा। आपको उस पिरामिड में ऊपर जाकर रचनात्मक संरचनाओं तक जाना होगा, जहाँ आप अपने सामने आने वाली समस्याओं के संबंध में बाइबल के विश्वदृष्टिकोण को समझ सकते हैं।

आप सिर्फ़ यह नहीं कह सकते कि, भगवान, मुझे बताओ कि मुझे क्या करना चाहिए, या मुझे बताओ कि इसका क्या मतलब है। यह एक रूढ़ि है जो हमारे कई ईसाई संदर्भों में है, जो बाइबल के सावधानीपूर्वक अध्ययन से भी पुष्ट नहीं होती। और, ज़ाहिर है, जीवन के प्रति इस तरह के दृष्टिकोण उन लोगों के लिए बहुत बड़ी मुसीबत पैदा करते हैं जो सोचते हैं कि यह वैसा ही होना चाहिए।

क्या आप कभी भगवान से नाराज़ हुए हैं क्योंकि उन्होंने आपको कुछ नहीं बताया? मुझे लगता है कि हम सभी कभी न कभी नाराज़ हुए हैं, लेकिन हमें ऐसा करने का अधिकार नहीं है क्योंकि उन्होंने कभी वादा नहीं किया कि वे ऐसा करेंगे। यह भगवान के काम करने का सामान्य तरीका नहीं है। एक और पाठ है जो दिलचस्प पाठ है।

गलातियों 5:18. मैं इसे न्यू रिवाइज्ड स्टैंडर्ड वर्शन से पढ़ने जा रहा हूँ। गलातियों 5:18. मुझे वहाँ जाना था, मुझे इसे चिह्नित करना चाहिए था। इस पाठ को सुनें।

श्लोक 16. गलातियों 5 आत्मा पर एक बड़ा अध्याय है। काश मेरे पास इनमें से कुछ बातों के बारे में आपसे बात करने का समय होता।

महान 5 और 6 अद्भुत हैं। वास्तव में मेरी वेबसाइट [gmeadors.com](http://gmeadors.com) पर, शिक्षण के अंतर्गत, आत्मा के फल पर 10 घंटे के व्याख्यान की एक श्रृंखला है। और आत्मा के फल पर व्याख्यान में, मैं गलातियों 5 और 6 के संदर्भ को छूता हूँ। यदि आप रुचि रखते हैं तो आप वहाँ जा सकते हैं।

5:16. मैं कहता हूँ, आत्मा के अनुसार जियो, और शरीर की इच्छाओं को पूरा मत करो। दूसरे शब्दों में, सांसारिक जीवन मत जियो। क्योंकि शरीर की इच्छाएँ आत्मा के विरोध में हैं।

आत्मा जो चाहती है वह शरीर के विपरीत है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर की बुद्धि, मानवीय बुद्धि। वही परिदृश्य।

क्योंकि ये एक दूसरे के विरोधी हैं, कि तुम जो करना चाहते हो, वह न करो। परन्तु यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो, तो व्यवस्था के आधीन नहीं। और शरीर के काम तो प्रगट हैं।

यदि आप आत्मा के द्वारा निर्देशित हैं। आइए देखें कि 2011 NIV ने इसे कैसे रखा है। 5:18. गलातियों 5:18. ओह, मैंने इसे चालू कर दिया।

गलातियों 5:18. यह आश्चर्यजनक है कि ये बातें कितनी छोटी हैं। ध्यान लगाओ। लेकिन अगर आप आत्मा के द्वारा निर्देशित हैं, तो आप व्यवस्था के अधीन नहीं हैं।

ठीक है। आत्मा के नेतृत्व में। यह वाक्यांश है।

आपको क्या लगता है कि आत्मा द्वारा निर्देशित होने का क्या मतलब है? मैं यह कहने की हिम्मत करता हूँ कि कई बार, आप और दूसरे लोग इस वाक्यांश को, मैं आत्मा द्वारा निर्देशित हुआ हूँ, किसी प्रकार की कार्रवाई या निर्णय के दावे के रूप में लेंगे जो आपने किया है। यह संदर्भ नहीं है, है न? गलातियों 5 का संदर्भ क्या है? गलातियों 5 का संदर्भ पवित्रीकरण है। आत्मा के फल से जीना, शरीर के कामों से नहीं।

यह नैतिक विकास है। यह सद्गुण और दुर्गुण है। गलातियों 5:18। आत्मा के द्वारा निर्देशित होने का क्या अर्थ है? यह एक रूपक है।

इसका मतलब यह नहीं है कि आप उस आदमी के हाथ में अपना हाथ डाल दें जो पानी पर चलकर आया है। अगर आपने कभी वह गाना सुना है, तो आपको पता होगा। यह उस बारे में बात नहीं कर रहा है।

यह एक रूपक है। लेड पवित्रीकरण का रूपक है। इस संदर्भ में, यदि आप आत्मा द्वारा निर्देशित हैं, यदि आप पवित्रीकरण का अनुसरण कर रहे हैं, तो आप कानून के अधीन नहीं हैं जैसा कि इस संदर्भ में समझा जाता है।

यह किसी व्यक्तिगत नेतृत्व के बारे में नहीं है। यह किसी ऐसी आवाज़ को सुनने के बारे में नहीं है जो आपको बताती है कि क्या करना है या क्या विश्वास करना है। यह सब बाइबल में पहुँचाया गया है।

यह बाइबल से नहीं आ रहा है। हमारे पास बहुत सी रूढ़ियाँ हैं जो वास्तव में इस बात के संदर्भ में गड़बड़ हैं कि ईश्वर हमसे कैसे संवाद करता है, ज्ञानमीमांसा के संदर्भ में, और आत्मा कैसे काम करती है। यह न्यूमेटोलॉजी है।

तो, गलातियों 5:18 का सम्बन्ध पवित्रीकरण से है। बी.बी. वारफील्ड द्वारा लिखित एक बेहतरीन लेख है जिसका नाम है आत्मा का नेतृत्व करना, जो उनके बाइबिल और धर्मशास्त्रीय अध्ययनों के संग्रह में है। अधिकांश पुस्तकालयों में ये लेख होते हैं।

आपको इसे बिना किसी परेशानी के सामने लाने में सक्षम होना चाहिए। यहाँ एक और है। ऊपरी कमरे का प्रवचन।

यह एक दिलचस्प बात है। यूहन्ना अध्याय 14 में, संदर्भ में, हम यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले की रात ऊपरी कमरे में प्रवचन कर रहे हैं। और यूहन्ना 14:26 में, हम इसे पढ़ते हैं।

यह लाल अक्षरों में लिखा है, जिसका इस्तेमाल किसी को भी नहीं करना चाहिए। मुझे तो यह भी नहीं पता कि मैंने अपने चश्मे का क्या किया। अब वे यहाँ नहीं हैं।

मैंने उन्हें कहीं और सेट किया होगा। देखो मैं इसे पढ़ सकता हूँ या नहीं। मेरे लिए लाल रंग पढ़ना मुश्किल है।

यूहन्ना 14:26. लेकिन सहायक, पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब कुछ सिखाएगा और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुम्हें याद दिलाएगा। वाह। मैंने सुना है कि लोग इसे टोपी से बाहर निकालते हैं।

वे कहेंगे, मुझे आपकी शिक्षा में कोई रुचि नहीं है। ईश्वर मुझे सिखाता है। आत्मा मुझे सिखाती है।

और इसके अलावा, यीशु हर समय ऐसा करता है। मैं उसकी आवाज़ सुनता हूँ, और हर रात सपने देखता हूँ। क्या यह श्लोक इसी बारे में है? सबसे पहले, हम ऊपरी कमरे में हैं।

यीशु, और इस बिंदु पर, मुझे अपने कालक्रम और 11 की जांच करनी होगी। यहूदा भोज से ठीक पहले चला गया। यदि आप इसे एक सामंजस्य में जांचते हैं, तो वह भोज से ठीक पहले चला गया।

वे ऊपरी कमरे में हैं। यीशु अपने शिष्यों को संबोधित कर रहे हैं, जो प्रेरित हैं और जो चर्च के नेता बनने जा रहे हैं। यह पद 26 के उत्तरार्द्ध का अर्थ समझ में आता है, जो कहता है, जो कुछ मैंने कहा है, उसे तुम्हें याद दिलाओ।

मैं आपको वह सब याद दिलाना चाहता हूँ जो मैंने कहा है। ऐसा होने के लिए, आपको इसे सुनना होगा। यह परमेश्वर द्वारा प्रेरितों के साथ काम करने के बारे में बात कर रहा है।

वास्तव में, कई टिप्पणीकार इसे प्रेरितों से किए गए वादे के रूप में देखते हैं कि वे यीशु की शिक्षा को सही ढंग से फिर से बनाने में सक्षम होंगे, जो उनमें से कुछ ने खुद सुसमाचार के संदर्भ में किया था। यह मेरे लिए कोई सामान्य वादा नहीं है कि मैं आपको सब कुछ सिखाऊंगा और आपको सभी चीजों की याद दिलाऊंगा। आप जानते हैं, छात्रों को परीक्षा से पहले इन आयतों को पढ़ना पसंद है।

आप जानते हैं, प्रभु, मुझे सब कुछ याद दिलाओ। मैं हमेशा प्रार्थना करता था, प्रभु, उन्हें जो कुछ भी उन्होंने पढ़ा है, उसके बारे में याद दिलाओ। अब, यह वैध है।

ठीक है, सिर्फ 14:26 ही नहीं, बल्कि 16:13 भी। अभी भी ऊपरी कमरे में, 16:13। यीशु पद 12 में कहते हैं, मुझे तुमसे बहुत सी बातें कहनी हैं।

आप कौन हैं? शिष्य, हम नहीं। हम इसे दूसरे दर्जे पर पाते हैं, लेकिन आप इसे अभी सहन नहीं कर सकते। जब सत्य का आत्मा आएगा, तो वह तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और जो आनेवाली बातें हैं, वे तुम्हें बताएगा, और मेरी महिमा करेगा।

देखिए, यह यीशु और प्रेरितों के बीच की बात है। इन्हें ऊपरी कमरे में हुए प्रवचन से नहीं निकाला जाना चाहिए, दीवार पर इस तरह से लटकाया जाना चाहिए जैसे कि वे मेरे हैं। नहीं, वे मैं नहीं हूँ।

मुझे उनका लाभ मिलता है क्योंकि प्रेरितों को सुसमाचार लिखने में, पत्र लिखने में यीशु द्वारा निर्देशित किया गया था, और यहाँ तक कि 15:26 में, मुझे लगता है कि युगांतशास्त्र के बारे में भी बात की गई है। जब वह अधिवक्ता आएगा जिसे मैं तुम्हारे पास भेजूँगा, अर्थात् पिता, तो सत्य की आत्मा पिता से आती है। वह मेरी ओर से गवाही देगा।

तुम्हें भी गवाही देनी है क्योंकि तुम शुरू से ही मेरे साथ रहे हो। यह सब प्रेरितिक है, मेरे दोस्तों। इन पाठों को संदर्भ से बाहर निकालकर बाइबल का दुरुपयोग न करें।

ये वे वादे हैं जो प्रेरित समुदाय के परमेश्वर के आयोजन से संबंधित हैं। हाँ, कुछ लेखक वहाँ नहीं थे, लेकिन प्रारंभिक चर्च में दिलचस्प बात यह है कि हर बार जब लूका ने कुछ कहा, तो यह उचित था क्योंकि वह पॉल का शिष्य था। हर बार जब मार्क ने कुछ कहा, तो यह उचित था क्योंकि उसे पीटर द्वारा सलाह दी गई थी।

इन लोगों को प्रेरितों द्वारा पवित्रशास्त्र के लेखन के बारे में प्रारंभिक चर्च की गवाही में बड़े पैमाने पर शामिल किया गया है। इसलिए, हमारे पास ऊपरी कमरे के प्रवचन में कई कथन हैं जो सत्य को प्राप्त करने से संबंधित हैं, लेकिन उनका हमारे द्वारा इसे प्राप्त करने से कोई लेना-देना नहीं है। उनका संबंध शिष्यों द्वारा इसे प्राप्त करने से है।

इसलिए, ये वादे नहीं हैं कि हम शास्त्रों का अध्ययन करने और निष्कर्ष पर पहुँचने की अपनी ज़िम्मेदारी से बच सकते हैं। अब, सबसे बड़ा वचन 1 यूहन्ना 2:26 और 27 है। अब, यह काफी दिलचस्प है।

मुझे यह बात कई बार समझ में आई है, मुझे नहीं पता कि यह कितनी बार हुआ है। यह 1 यूहन्ना 2:26 और 27 में है। 1 यूहन्ना, ये यूहन्ना पत्र अद्भुत हैं।

क्या आपने कभी 2 और 3 पढ़े हैं? बहुत से लोगों ने इसे कभी पढ़ा ही नहीं। वे बहुत ही रोचक हैं, और वे आरंभिक चर्च के बारे में बहुत जानकारी देते हैं। 1 यूहन्ना अन्य दो की तुलना में थोड़ा अधिक धार्मिक है।

वे थोड़े ज़्यादा ऐतिहासिक हैं, लेकिन 1 यूहन्ना 2:26 और 27 में, इस अंश को सुनें। फिर से, मैं ध्यान केंद्रित करने की कोशिश कर रहा हूँ। यहाँ हम हैं।

मैं ये बातें तुम्हें उन लोगों के बारे में लिख रहा हूँ जो तुम्हें धोखा देना चाहते हैं। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, अभिषेक और अभिषेक को भीतरी आत्मा के रूप में समझना चाहिए। यह एक सादृश्य है, भीतरी आत्मा के लिए एक रूपक है।

जो कुछ तुम उससे प्राप्त करते हो, वह तुम में बना रहता है, इसलिए तुम्हें किसी की शिक्षा की आवश्यकता नहीं है। परन्तु जैसा उसका अभिषेक तुम्हें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है, और झूठ नहीं है, और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है, और उसने तुम्हें क्या सिखाया है? उसमें बने रहो। अब, हे प्रभु बच्चों, उसमें बने रहो, कि वह यीशु है, ताकि जब वह प्रगट हो, तो हमें भरोसा हो और हम लज्जित न हों।

वाह, मैंने यह काम कर लिया है। मुझे किसी शिक्षक की ज़रूरत नहीं है। आत्मा मुझे सब कुछ सिखाती है।

लेकिन संदर्भ में इसका क्या मतलब है? सबसे पहले, अपने आप से कुछ सवाल पूछें। अगर हमें शिक्षकों की ज़रूरत नहीं है, तो फिर परमेश्वर ने इफिसियों 4 में शिक्षकों को उपहार के रूप में क्यों दिया? अगर हमें शिक्षकों की ज़रूरत नहीं है, तो यीशु ने सुसमाचार के अंत और प्रेरितों के काम की किताब की शुरुआत में सभी आदेशों में क्यों कहा, सारी दुनिया में जाओ और जो बातें मैंने तुम्हें सिखाई हैं, उन्हें सिखाओ? अगर हमें शिक्षकों की ज़रूरत नहीं है, तो यूहन्ना ने उन्हें क्यों लिखा? उसे बस प्रार्थना करनी चाहिए थी और आत्मा से पूछना चाहिए था कि उन्हें क्या सोचना चाहिए। आप देखिए, यह सब इस पाठ के सतही पढ़ने की धारणा के खिलाफ़ सबूत है कि यह परमेश्वर के वचन को समझने की खोज के लिए किसी तरह का विकल्प है और आत्मा बस इसका ध्यान रखेगी।

आइए इसे फिर से देखें, और मैं आपको संदर्भ को समझने में मदद करने के लिए यहाँ एक शब्द डालने जा रहा हूँ। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, उससे जो अभिषेक तुम्हें मिलता है वह तुममें बना रहता है, और इसलिए तुम्हें किसी की ज़रूरत नहीं है, और अब यहाँ पद 26 में किसी के बाद शब्द आता है, या वह 27 है? तुम्हारे पास कोई नहीं है, तुम्हें किसी और की ज़रूरत नहीं है जो तुम्हें सिखाए। तुम देखो, यूहन्ना ने उन्हें सिखाया था, ये उसके शिष्य हैं।

पॉल के चले जाने के बाद जॉन को एशिया माइनर विरासत में मिला और उसने एशिया माइनर की कलीसियाओं का मार्गदर्शन किया। वह उनका शिक्षक था। उन्हें परमेश्वर की आत्मा प्राप्त हुई थी।

परमेश्वर की आत्मा, अभिषेक ने उन्हें पुष्टि की कि यूहन्ना ने जो कहा वह सही था। अब वे झूठे शिक्षकों द्वारा यूहन्ना से प्राप्त समझ से भटकने के लिए परीक्षा में पड़ गए हैं, और यूहन्ना कहता है, तुम ऐसा क्यों करोगे? जिस आत्मा ने तुम्हें यह विश्वास दिलाया कि जो मैंने तुम्हें बताया वह सच है, वह अभी भी तुम्हें विश्वास दिला रही है, इसलिए भटकना छोड़ो और जो तुम्हें सिखाया गया है उसका पालन करो। तुम्हें किसी और को तुम्हें सिखाने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि परमेश्वर की आत्मा उस शिक्षा की पुष्टि करती है जो तुम्हें मिली है।

उसमें बने रहो। आप देखिए, हर वह पाठ जिसे बाइबल से अलग किसी तरह की प्रत्यक्ष आत्मा की शिक्षा का दावा करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, वह बकवास है। यह संदर्भ को ध्यान से पढ़ने की कमी है।

यह बाइबल का उपयोग है। यह बाइबल की समझ के बजाय बाइबल का दुरुपयोग है। व्याख्या में आत्मा की भूमिका आपको यह विश्वास दिलाना है कि आपको व्यस्त हो जाना चाहिए, आपको यह विश्वास दिलाना है कि यह सच है, यह वास्तविक है, यह सम्मोहक है, और आपको अपना होमवर्क करने की आवश्यकता है।

अन्यथा, आप सिर्फ़ टेलीविज़न देखते हैं, या आप अपने दोस्तों के साथ नाश्ता और कॉफ़ी लेते हैं, और आप चैट सेशन करते हैं, लेकिन आप कभी भी परमेश्वर के वचन को अपनी सोच में आत्मसात नहीं कर पाएँगे। इसलिए ज्ञानमीमांसा के अनुसार, ज्ञानोदय बिना अध्ययन के बहाना नहीं है। ज्ञानोदय शब्द की चाहे जो भी वैधता हो, इसका संबंध उस वचन की आत्मा की गवाही से है जिसे आपको ग्रहण करने की आवश्यकता है।

यही बात पौलुस कह रहा है, यही बात यूहन्ना कह रहा है, और यही बात यीशु ने भी कही। आत्मा एक महान सहायक है, लेकिन आत्मा उस काम का विकल्प नहीं है जिसे करने के लिए परमेश्वर ने हममें से प्रत्येक को बुलाया है। यह हमें वास्तव में अध्याय दो के अंत तक ले आता है।

अब हमारे पास अध्याय तीन और चार हैं, और दुर्भाग्य से, मुझे कुछ निर्णय लेने हैं, कार्यकारी निर्णय। हमने अध्याय एक से चार में लगभग चार घंटे बिताए हैं, और हमारे पास बहुत सारे अध्याय बाकी हैं। मेरे पास आपसे कहने के लिए बहुत सी बातें हैं, लेकिन अभी नहीं। मैंने आपको एक छोटी सी रूपरेखा दी है जिसका आप अनुसरण कर सकते हैं।

आप टिप्पणियाँ पढ़ सकते हैं। कुछ वाक्यांश हैं जिनके बारे में मैं बात करने के लिए बेताब हूँ। जो लिखा गया है और उनमें से कई चीज़ों से आगे न जाएँ; आप इसे खोदकर निकाल सकते हैं जैसे मैंने आपको बताने के लिए किया था, लेकिन इसे खुद ही खोदकर निकालें।

अगर आप ऐसा करेंगे तो आप इसे और भी ज़्यादा सराहेंगे। हम विवेक के विचार के बारे में बात करेंगे। मैंने पहले ही अध्याय चार, श्लोक चार का उल्लेख किया है, जो एक बहुत ही महत्वपूर्ण श्लोक है, लेकिन जब हम अध्याय आठ से दस में जाएँगे तो हम विवेक पर विस्तार से विचार करेंगे।

खैर, एक से चार तक का समय चुनौतीपूर्ण है। हमारी शुरुआत थोड़ी धीमी रही। मैं एक से नौ तक के व्याख्यानों में से एक को फिर से करने के बारे में सोच रहा था क्योंकि मैंने वहाँ बहुत अच्छा काम नहीं किया था, लेकिन यह एक घंटे का है, और मेरे पास करने के लिए बहुत सारे घंटे हैं, और इसलिए मैं बस इसके साथ रहने जा रहा हूँ, और मुझे उम्मीद है कि जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे आप हमारे साथ बने रहेंगे।

हमारे कुछ दिन दूसरों से बेहतर होंगे, लेकिन मैं हमेशा स्पष्ट रहने की कोशिश करता हूँ। इसीलिए मैंने आपको नोट्स दिए हैं और इन चीजों को जाँचने के लिए प्रोत्साहित किया है। अपना होमवर्क खुद करें।

यदि आप ऐसा करते हैं तो यह आपके लिए बेहतर होगा। मैं एक प्रेरणा हूँ। मैं आपको यहाँ-वहाँ एक प्रतिमान दे रहा हूँ, और मुझे आशा है कि यह आपको परमेश्वर के वचन का एक अच्छा छात्र बनने के लिए प्रोत्साहित करेगा। यीशु के नाम में। आमीन।

यह डॉ. गैरी मीडर्स 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर अपनी शिक्षा में हैं। यह व्याख्यान 12 है, क्लो के घर से मौखिक संचार के लिए पॉल की प्रतिक्रिया, अध्याय 2, श्लोक 5 से श्लोक 16 तक।